प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय : पाण्डव भवन, माउण्ट आबू 'राज.' – 307501
उपक्षेत्रीय कार्यालय : गोल्डन वर्ल्ड, मालनपुर के पास, मेन रोड, ग्वालियर 474020(म.प्र.)
फोन नं. 09425110771,09425111393 ई–मेल–maharajpura.gwl@bkivv.org

---

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

''आहार, विहार और व्यवहार को शुद्ध करने की सात्विक शिक्षा देने वाला अनोखा विश्वविद्यालय है ब्रह्माकुमारीज'' –स्वामी प्रज्ञानंद जी महाराज

(अविनाशी राजस्व अश्वमेघ रूद्र गीता ज्ञान महायज्ञ का हुआ भव्य उद्घाटन)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने ग्वालियर संभाग में अपनी ईश्वरीय सेवाओं के 50 वर्ष पूरे कर लिये है। अतः इस वर्ष संस्थान गोल्डन जुबली वर्ष के रूप में मना रहा है एवं इस अवसर पर ''अविनाशी राजस्व अश्वमेघ रूद्र गीता ज्ञान महायज्ञ'' का आयोजन संस्थान के उपक्षेत्रीय मुख्यालय, गोल्डन वर्ल्ड काम्पलेक्स, ज्ञानवीणा मूल्य शिक्षा विद्यापीठ, महाराजपुरा, मालनपुर रोड, ग्वालियर में दिनांक 10 फरवरी से 5 मार्च तक किया गया है। जिसमें 10 फरवरी को दोपहर 4 बजे महायज्ञ का उद्घाटन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ग्वालियर सहित भारत एवं विश्व के विभिन्न धर्मों के धर्माधिकारी गणमान्य संत, महन्त जनों के करकमलों द्वारा उद्घाटन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के अलावा आचार्य स्वामी वेदानंद सरस्वती, विदिशा, रामाधार शर्मा, उपाध्यक्ष, श्री बाबू सोलोमन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, फादर डा0 मसीह, श्री एलबर्ट एस. विलयस, कुलवंत सिंह सचदेवा, सदस्य शामिल हुए। ब्रह्माकुमारी शैला बहिनजी, छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ने सभी का शब्दों द्वारा स्वागत किया। मुख्य अतिथि आदरणीय भ्राताश्री स्वामी प्रज्ञानंद जी महाराज संस्थापक, अन्तर्राष्ट्रीय प्रज्ञा मिशन, दिल्ली ने कहा कि आहार, विहार और व्यवहार को शुद्ध करने की सात्विक शिक्षा देने वाला अनोखा विश्व विद्यालय है ब्रह्माकुमारीज। उन्होंने आगे कहा कि इस विश्व विद्यालय द्वारा दी जाने वाली शिक्षायें हमारे सर्वे भवन्तु सुखिनः,....इस मंत्र को संपूणता प्रदान करती है। राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कमलेश बहिन जी, जोनल डायरेक्टर, कटक, उड़ीसा ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये। माननीय भ्राता श्री मुनीष पाल सिंह, अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिषाचार्य, मॉरीशस, ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में चार चीजें आवश्यक है खुशी, मन की शांति, विश्वास और समृद्धि जो कि इस विश्वविद्यालय द्वारा दी जा रही शिक्षाओं से एवं राजयोग के अभ्यास से सहजता पूर्वक पायी जा सकती है। श्री प्रताप सिंह विष्ट, सदस्य, योजना आयोग, उत्तराखण्ड सरकार ने अपना अनुभव बताया कि कैसे यह परमात्मा का परिचय पाकर अपना जीवन दिव्य बनाया।

क्रमशः....2

राजयोगिनी बी.के. अवधेश बहिनजी, जोनल डायरेक्टर, म.प्र. भोपाल जोन ने आर्शीवचन देते हुए कहा कि धरा पर आकर भगवान ने अविनाशी राजस्व अश्वमेघ रूद्र गीता ज्ञान महायज्ञ रचा। जिस यज्ञ से स्वर्णिम संसार की स्थापना होती है और जिस यज्ञ में सभी कमी–कमजोरियों की आहुती डाली जाती है। यह वही यज्ञ है जो गीता में दिखाया गया है जिसके द्वारा सभी आत्माओं का कल्याण होता है एवं सभी समस्याओं का समाधान होता है। भ्राता श्री आशीष जी, साधना चैनल ने सभी को शब्दों द्वारा धन्यवाद दिया। ब्रह्माकुमारी ज्योति बहिन, ने मंच संचालन किया। कुमारी शोभा, कुमारी आकृति एवं कुमारी अभिलाषा द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के पूर्व पत्रकारवार्त्र का आयोजन किया गया। जिसे राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश बहिनजी, जोनल डायरेक्टर, म.प्र. भोपाल जोन ने संबोधित करते हुए इस महायज्ञ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए स्वर्णिम संसार की स्थापना हेतु 21 सूत्रीय कार्य योजना के बारे में पत्रकार गणों को अवगत कराया एवं पूरे आयोजन के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

<u>स्वर्णिम संसार की स्थापना के लिये 21 सूत्रीय कार्यक्रम</u> :–

1. स्वय–भू निराकार शिवपिता के प्रिय बच्चों का आह्वान।
2. स्वर्णिम संसार की स्थापना के लिये विशिष्ट रत्नों का सेलेक्शन।
3. नारी शाक्ति को सशक्त बनाने के लिये प्रशिक्षण।
4. युवा वर्ग को शांतिदूत बनाने की ट्रेनिंग ।
5. विद्यार्थीयों को भौतिकज्ञान के साथ आध्यात्मिक ज्ञान देने की सुविधा।
6. बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार देने वाली पालना।
7. स्व स्वाथ्य के लिये शाहाकारी जीवन जीने की प्रेरणा।
8. किसान वर्ग में उमंग उत्साह भरने की भावना।
9. स्वयं के जीवन को साकारात्मक दिशा चलाने की कला।
10. साधनों के प्रयोग के साथ साथ साधना का भी बैलेंस।
11. दलित वर्ग में शुभ भावना का संचार।
12. क्रोधमुक्त बनाने की प्रयोगशाला का शुभारंभ।
13. जिम्मेवारी संभालने की आध्यात्मिक पाठशाला।
14. भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का सफल सरल प्रयोग।
15. कन्याओं को दैवी स्वरुपा स्वमान में रहने की ट्रेनिग।
16. माता पिता की सम्माननीय सेवा व्यवस्था।
17. प्रकृति के प्रति मित्रता भाव व्यवहार।
18. मनोवल को मजबूत बनाने के लिये ''राजयोग'' का प्रयोग। मानसिक प्रदूषण पार्यावरण प्रदूषण का निराकरण।
19. भारत को जगतगुरु के सिंहासन पर विराजमान करने वाली हास्तियों का सम्मान।
20. सर्व के प्रति शुभ भावना शुभ कामना वाला प्रशासन।
21. स्वयं व सर्व को सम्पन्न बनाने वाली योजना।

ईश्वरीय सेवा में,

(बी.के. ज्योति)